वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षक की भूमिका

डॉ0 केशरी नन्दन मिश्रा
एसोसिएट प्रोफेसर (इतिहास)
पंडित दीन दयाल उपाध्याय राजकीय पी.जी. कालेज, सैदाबाद इलाहाबाद

सारांश
आधुनिक वैश्विक परिप्रेक्ष्य में वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षक मानवतावादी दृष्टिकोण अपनाने जा रहा है। इस सदी में शिक्षक पुनर्गठन, धर्मनिरपेक्षता और लोकतांत्रिक समाजवाद को स्वीकार कर रहा है। शिक्षक आज बच्चे का शिक्षक कम और मार्गदर्शक अधिक है। 'इवान इलिच' ने डी-स्कूलिंग का सुझाव दिया। उन्होंने स्कूल को लगभग मृत मान लिया और इस अवधारणा को देकर स्कूल के अस्तित्व पर ही सवालिया निशान लगा दिया। इवान इलिच ने स्वीकार किया कि शिक्षा प्रणाली का प्रारूप अनौपचारिक और गैर-औपचारिक होना चाहिए, जिसमें बच्चे को जब चाहें सीखने का अधिकार हो और उसे यह अवसर मिलना चाहिए। यही कारण है कि वर्तमान में औपचारिक शिक्षा के स्थान पर मुक्त शिक्षा के स्वरूप को समर्थन मिल रहा है। शिक्षक अब स्कूल से दूर रहकर भी बच्चों को पढ़ा रहे हैं। प्रारंभ से लेकर वर्तमान तक शिक्षण व्यवसाय निस्संदेह एक आदर्श पेशा रहा है और यही कारण है कि शिक्षक की जिम्मेदारी, उसकी जिम्मेदार भूमिकाएं और उसका कार्य अधिक आदर्श होता है। यदि हम आधुनिक वैश्विक शिक्षा प्रणाली में शिक्षक की प्रकृति की अवधारणा पर ध्यान दें, तो यह देखा जाता है कि शिक्षक वर्तमान पारंपरिक शिक्षण प्रणाली और कार्य प्रणाली के साथ बदली हुई परिस्थितियों के अनुसार खुद को तैयार कर रहा है। आज शिक्षक अपने शिक्षण में नई, समकालीन तकनीकों, नई तकनीक और यांत्रिक उपकरणों का उपयोग करता है। आज शिक्षकों ने प्रवेश प्रक्रिया, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया, मूल्यांकन प्रक्रिया, अभ्यास प्रक्रिया आदि में नए कठिन और नरम तकनीकी दृष्टिकोणों का उपयोग करना शुरू कर दिया है।

मुख्य शब्द: तकनीक, मूल्यांकन प्रक्रिया, वैश्विक शिक्षा, अवधारणा, शिक्षण-अधिगम

प्रस्तावना

वर्तमान शिक्षक अतीत के शिक्षकों से अलग दिखता है, जिसमें शिक्षक बच्चों के मित्र और सहयोगी होने के नाते एक मार्गदर्शक की भूमिका निभाता है। शिक्षक छात्रों को विभिन्न मार्ग दिखाकर उनकी सोचने की शक्ति को उत्तेजित करता है और उन्हें सही चुनाव करने में मदद करता है। वर्तमान में शिक्षक सीखने-सिखाने के साथ-साथ अपने छात्रों में राष्ट्रीय एकता के मूल्यों को विकसित करने में भूमिका निभाता है। प्राचीन काल से लेकर आज तक शिक्षक को समाज के आदर्श व्यक्तित्व के रूप में स्वीकार किया जाता है। प्रारंभिक समय में वे ब्रह्मा, विष्णु और महेश के धर्मगुरु बने और बाद में वे धर्मगुरु बने और वर्तमान में, यह निश्चित रूप से स्पष्ट है कि व्यक्तित्व निर्माण में शिक्षक की एक अनूठी भूमिका है। मनोविज्ञान के सकारात्मक प्रभाव ने बालक को शिक्षा के केन्द्र में ला खड़ा किया है। इसलिए आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक शिक्षण-अधिगम के शिक्षक होने के साथ-साथ माता-पिता, मार्गदर्शक, सलाहकार, निष्पक्ष निर्णय सहयोगी आदि कई भूमिकाएँ निभाते हैं। शिक्षक छात्रों का नेतृत्व करता है और उन्हें सही दिशा देता है। शिक्षक समाज और समय की आवश्यकता के अनुसार विद्यालय में अनेक क्रियाकलापों के आयोजन का कार्य भी करता है। विद्यार्थियों की योग्यताओं और योग्यताओं का पता लगाकर, उनकी रुचियों और योग्यताओं को जानकर, उनके व्यक्तित्व को पहचानकर, उनके गुण-दोषों को जानकर और उसी आधार पर अध्ययन क्षमताओं का आकलन करके, उन्हें सही दिशा में आगे बढ़ने का निर्देश देता है।

शिक्षक समाज का एक आदर्श सदस्य होता है जो बिना किसी भेदभाव जैसे जाति, धर्म, लिंग आदि के बच्चे के व्यक्तित्व को बढ़ाता है। समाज के मानदंडों के अनुसार व्यक्तित्व का निर्माण करना शिक्षक का दायित्व है। शिक्षक का अधिक महत्वपूर्ण कार्य छात्रों के सामाजिक, नैतिक और चरित्र विकास पर ध्यान देना है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षक की कई भूमिकाएँ हैं, जिनका अध्ययन करने की आवश्यकता है:

विषय विशेषज्ञ: वर्तमान वैश्विक शिक्षा प्रणाली में केवल विषय-वस्तु का ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसमें निपुणता भी आवश्यक है। शिक्षक को विषय में निहित सभी कौशल के बारे में पता होना चाहिए ताकि वह छात्रों को उस ज्ञान कौशल को पारित करने में सक्षम हो। शिक्षक को संचार की कला में विशेष रूप से कुशल होना चाहिए, जिसमें बुनियादी क्षमता, कार्य क्षमता, शिक्षण-शिक्षण कला, विधियों और तकनीकों का ज्ञान, सहायक कौशल का ज्ञान होना आवश्यक है। बाल मनोविज्ञान की विशेषताओं से परिपूर्ण विद्यार्थी के स्वभाव, विषय के स्वरूप, समाज की आवश्यकताओं और वर्तमान और भविष्य की आवश्यकताओं को समझने वाला ही शिक्षक बनने की योग्यता रखता है। वर्तमान शिक्षक के पास अनुकूल शैक्षिक वातावरण और प्रौद्योगिकी उपकरणों के उपयोग के माध्यम से ज्ञान विकसित करने की विशेषज्ञता है।

वोकेशनल गाइड: वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षण-अधिगम अन्य व्यवसायों की तरह नहीं बल्कि एक जिम्मेदार व्यवसाय है। आधुनिक वैश्विक शिक्षा प्रणाली में शिक्षक की प्रमुख जिम्मेदारी यह है कि वह बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए अपने छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन का उपयोग कैसे करता है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में, शिक्षकों को विषय पढ़ाना चाहिए, लेकिन अपने छात्रों को पर्याप्त विकल्प चुनने की स्वतंत्रता भी देनी चाहिए। इन सभी कार्यों को अनुशासन प्राप्त करने की जिम्मेदारी के साथ किया जाना चाहिए। शिक्षक के पेशेवर कोड में यह भी कहा गया है कि शिक्षक को आदर्श स्थिति में खुद को अनुशासित करना चाहिए। विद्यालय में सौंपी गई सभी जिम्मेदारियों को निर्धारित समय के भीतर पूरा करना शिक्षक की पूर्ण व्यावसायिकता को दर्शाता है।

शिक्षक एक सामाजिक रोल मॉडल है: किसी भी समाज में शिक्षक एक सामाजिक आदर्श होता है, यह अवधारणा अनादि काल से भारतीय शिक्षा प्रणाली में अंतर्निहित है। शिक्षक विभिन्न माध्यमों से एकत्रित नई जानकारी को सीधे छात्रों के साथ साझा करता है। वह एक न्यायाधीश के रूप में छात्रों के बीच उत्पन्न होने वाले विवादों को आसानी से हल करता है, इसलिए यहां वह निर्णय लेने में न्यायाधीश की भूमिका निभाता है। वह मूल्यांकन करते समय एक निष्पक्ष मूल्यांकनकर्ता की भूमिका निभाता है। माता-पिता के रूप में, शिक्षक सच्चाई और झूठ की जांच करके बच्चों के लिए निर्णय लेता है। वर्तमान में छात्र बिना किसी कारण के तनाव में रहते हैं, इसलिए उन्हें समझना और समस्याओं का समाधान करना शिक्षक के सामाजिक रोल मॉडल की भूमिका के अंतर्गत आता है।

निष्कर्ष:

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक माता-पिता, मार्गदर्शक, सहायक और सामाजिक आदर्श की प्रतिमूर्ति है। बालक की अभिवृत्तियों एवं अभिवृत्तियों के अनुसार वह शिक्षण-अधिगम सामग्री को प्रभावी ढंग से संकलित एवं प्रस्तुत करता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षक अपने स्वयं के शिक्षण में नई विधियों और तकनीकों और नई तकनीक का उपयोग करता है। वह बच्चों के बीच जाति, धर्म, संस्कृति और स्थान आदि किसी भी भेदभाव को बर्दाश्त नहीं करता है और सभी के साथ समान व्यवहार करके आदर्श स्थिति

बनाता है। उनके हृदय में सभी जातियों, धर्मों, सभी भाषाओं और साहित्य और सभी समाजों और संस्कृतियों के प्रति उदार दृष्टिकोण है। यही कारण है कि शिक्षक के माध्यम से बच्चों में मूल्यों का विकास कर राष्ट्रीय एकता का विकास संभव है।

References

- Ben-Peretz, M. (2001). The impossible role of teacher educators in a changing world. *Journal of teacher education*, *52*(1), 48-56.
- Taylor, R. W. (2010). The role of teacher education programs in creating culturally competent teachers: A moral imperative for ensuring the academic success of diverse student populations. *Multicultural Education*, *17*(3), 24-28.
- Gray, W. S. (1961). The role of teacher education. *Teachers College Record*, *62*(9), 144-161.
- Leithwood, K. A. (1992). The principal's role in teacher development. *Teacher development and educational change*, 86-103.
- Gray, W. S. (1961). The role of teacher education. *Teachers College Record*, *62*(9), 144-161.
- Anderson, T. (2004). Teaching in an online learning context. *Theory and practice of online learning*, *273*.
- McAuliffe, M. D., Hubbard, J. A., & Romano, L. J. (2009). The role of teacher cognition and behavior in children's peer relations. *Journal of abnormal child psychology*, *37*(5), 665-677.
- Koki, S. (1997). *The role of teacher mentoring in educational reform* (pp. 1-6). PREL Briefing Paper. Honolulu, HI: Pacific Resources for Education and Learning.